Basant Mela (Hindi)



बसन्त मेला



शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।



त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

बसन्त मेला

येह रिसाला (**बसन्त मेला**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बसन्त मेला

येह रिसाला (23 सफ़हात) मुकम्मल पढ़ कर ख़ुद को और दूसरे मुसल्मानों को अज़ाबे इलाही से बचाने की तदाबीर कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, ह़बीबे परवर दगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे नूरबार है **:** "तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा ।" **(فِردَوسُ الاخبار ج۱ص۴۲۲حدیث ۳۱۴۹)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बसन्त मेला

जूं ही सर्दी का ज़ोर टूटता और (फ़रवरी में) **मौसिमे बहार** की आमद होती है मर्कज़ुल औलिया लाहोर, सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद), रावल पिन्डी, गोजरांवाला और पाकिस्तान के कई छोटे बड़े शहरों में "**बसन्त**" के नाम पर नाचरंग की मह़फ़िलें सजाई जातीं, शराबें पी जातीं और ख़ूब **पतंग बाज़ी** के मेले सजाए

जाते हैं जिस में हमारे बे शुमार मुसल्मान भाई नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर बे तह़ाशा गुनाह करते और करोड़ों रुपै हवा में उड़ा देते हैं, उ़मूमन येह सिल्सिला मार्च के आख़िर तक जारी रहता है।

बसन्त मेला एक गुस्ताख़े रसूल की यादगार है !

मेरे भोले भाले इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं कि "बसन्त मेले" का आग़ाज़ क्यूं और कैसे हुवा ? दिल पर हाथ रख कर सुनिये कि **येह एक गुस्ताख़े रसूल की यादगार है !** जी हां तक़्सीमे हिन्द से भी काफ़ी पहले सियाल कोट के एक ग़ैर मुस्लिम ने हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और शहज़ादिये कौनैन सय्यि-दतुना बीबी **फ़ात़िमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शाने अ़-ज़मत निशान में مَعَاذَاللّٰہ गुस्ताख़ी की, आ़शिक़ाने रसूल बे क़रार हो गए जो कि एक फ़ित़्री अम्र था, मुजरिम गिरिफ़्तार कर लिया गया और उसे मर्कजु़ल औलिया लाहोर ला कर कोर्ट में मुजरिमों के कटह्रे में खड़ा कर के **सज़ाए मौत** सुना दी गई, और फिर उस गुस्ताख़े रसूल को कैफ़रे किरदार तक पहुंचा दिया गया। उस की मौत पर ग़ैर मुस्लिमों में सफ़े मातम बिछ गई ! उन के एक रईस ने उस गुस्ताख़े रसूल के "यौमे हलाकत" की याद ताज़ा रखने के लिये मौसिमे बहार **"बसन्त मेले"** की बुन्याद रखी और फिर हर साल मेला मनाया जाने लगा[1]...... सद करोड़ अफ़्सोस ! कि नफ़्सो शैत़ान की चाल में आ कर कुछ मुसल्मान भी इस की त़रफ़ माइल हो गए, बसन्त मेला जारी

1 : Punjab under the later Mughals, स. 279, मत़्बूआ़ लाहोर, रोज़नामा नवाए वक़्त 4 फ़रवरी 1994 ई. बित्तसर्रुफ़

करने वाले तो कभी के मर खप कर मिट्टी में मिल गए मगर अपनी यक़ीनी और अटल मौत से ग़ाफ़िल मुसल्मानों ने इस मेले को जारी रखने में अपना किरदार अदा किया, बिल आख़िर वोह भी मौत का जाम ग़ट-ग़टा कर अंधेरी क़ब्र की सीढ़ी उतर गए मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! बसन्त मेले का गुनाहों भरा सिल्सिला अब भी हमारे मुसल्मान भाइयों में अपनी तमाम तर हलाकत सामानियों के साथ ख़ूब नुहूसतें लुटा रहा है।

पतंग उड़ाने, पेच लड़ाने, पतंग और डोर लूटने और बेचने का शर-ई हुक्म

"बसन्त मेले" में **पतंग** और डोर बेचने, ख़रीदने, उड़ाने, पेच लड़ाने और कटी हुई पतंग लूटने को बुन्यादी हैसिय्यत ह़ासिल होती है, यक़ीनन येह काम **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم को ख़ुश करने वाले नहीं हैं। **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 24 सफ़्ह़ा 660 पर है : कन्कय्या (या'नी पतंग) लूटना ह़राम, और ख़ुद आ कर गिर जाए तो उसे फाड़ डाले, और अगर मा'लूम न हो कि किस की है तो **डोर** किसी मिस्कीन को दे दे कि वोह किसी जाइज़ काम में सर्फ़ (या'नी कोई जाइज़ इस्ति'माल) कर ले, और ख़ुद मिस्कीन हो तो अपने सर्फ़ (या'नी इस्ति'माल) में लाए, फिर जब मा'लूम हो कि फ़ुलां मुस्लिम की है और वोह इस तसद्दुक़ या इस मिस्कीन के अपने सर्फ़ पर राज़ी न हो तो देनी आएगी और कन्कय्या (या'नी पतंग) का मुआ-वज़ा बहर ह़ाल कुछ नहीं। (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद लिखते हैं :) कन्कय्या (या'नी पतंग) उड़ाना मन्अ़ है और लड़ाना गुनाह। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 660) जब कि फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़्ह़ा 659 पर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : कन्कय्या (या'नी पतंग) उड़ाने में वक़्त (और) माल का ज़ाएअ़ करना

होता है, येह भी गुनाह है और गुनाह के आलात कन्कय्या (या'नी पतंग), डोर बेचना भी मन्अ़ है। (ऐज़न, स. 659)

सुवाल : आज कल पतंग की डोर लूटने का उ़र्फ़ जारी है, लिहाज़ा क्या अब लूटने की इजाज़त नहीं समझी जाएगी ?

जवाब : इजाज़त नहीं समझी जाएगी, हर उ़र्फ़ जाइज़ नहीं हुवा करता। मालिक ख़ामोश इस लिये हो जाता है कि पतंग या डोर लूटने का आ़म रवाज हो चला मगर इस त़रह़ अपना माल जाने पर दिल से राज़ी कौन हो सकता है ! इस का बस चले तो वोह ख़ुद ही दौड़ कर अपनी कटी पतंग पकड़ ले, किसी को भी अपनी पतंग न लूटने दे, कभी कभार अपनी कटी हुई पतंग क़रीब गिरने पर ख़ुद लूटने की कोशिश भी की जाती है। नीज़ पतंग कट जाने के बा'द अपनी डोर जल्दी जल्दी खींचते इसी लिये हैं कि लूटने वालों के हाथ न आए या लुटेरे के हाथ से जितनी बचाई जा सकती है बचा ली जाए। इस को यूं समझ लें कि अगर कोई डाकू किसी को लूट रहा हो और लुटने वाला अन्दर की जेबों को छुपा कर या किसी दूसरे त़रीक़े से बचाने की कोशिश कर रहा हो तो इस का येह मत़लब नहीं कि बक़िय्या रक़म के लुटने पर वोह राज़ी है।

पतंग बाज़ी के दुन्यवी व माली नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तवे में जो पतंग फाड़ देने का ज़िक्र है येह वहां के लिये है जहां लड़ाई झगड़े का अन्देशा न हो, अगर फ़साद या बुग़्ज़ो इनाद पैदा होने की सूरत हो तो फ़ितने से बचने की सूरत इख़्तियार करे। बहर ह़ाल पतंग बाज़ी करने वालों की ख़िदमतों में म-दनी इल्तिजा है कि इस से तौबा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर

लें। पतंग बाज़ी में उख़्रवी नुक़्सान तो है ही, इस में दुन्यवी तौर पर भी हलाकत का सामान है। कई पतंग बाज़ धाती (या'नी मेटल की) डोर इस्ति'माल करते हैं, धाती डोर वाली पतंग कट कर बसा अवक़ात बर्क़ी तारों से जा टकराती है और फिर इस से बिजली के ट्रान्सफ़ोर्मर्ज़ और दीगर आलात की तबाही मच जाती है और एक ही दिन में करोड़ों रुपियों का नुक़्सान हो जाता है, कई कई घन्टों के लिये अ़लाक़े तारीकी में डूब जाते हैं, अस्पतालों में बिजली न होने की वजह से नाज़ुक ऑपरेशनों में रुकावटें खड़ी होती हैं, मोटरें न चलने की वजह से पानी की क़िल्लत (या'नी तंगी) हो जाती है, बिजली की बार बार ट्रिपिंग (या'नी आने जाने) से घरेलू इलेक्ट्रोनिक अश्या और कारख़ानों वग़ैरा की सन्अ़तों को पहुंचने वाले नुक़्सानात का ह़त्मी अन्दाज़ा लगाना तो मुश्किल है अलबत्ता एक सर्वे के मुत़ाबिक़ 2003 ई. में पतंग की धाती डोर की वजह से सिर्फ़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे लेस्को (Lesco) को **अढ़ाई अरब रुपै** का नुक़्सान उठाना पड़ा था!

पतंग बाज़ी से होने वाले जानी नुक़्सानात

पतंग बाज़ी से माली नुक़्सानात के साथ साथ जानी नुक़्सानात भी होते हैं, धाती डोर अगर बिजली की तार से छू जाए तो पतंग उड़ाने वाला या फिर उस को लूटने वाला बसा अवक़ात **मौत के मुंह** में चला जाता है। इस ज़िम्न में मा'मूली तब्दीली के साथ बा'ज़ लरज़ा ख़ैज़ अख़्बारी ख़बरें मुला-ह़ज़ा हों : ❁ 2004 ई. में मर्कज़ुल औलिया लाहोर के "अ़ब्दुल करीम" रोड पर अपने घर की छत पर

खड़े एक सेल्ज़ मेन ने एक कटी पतंग पकड़ने के लिये पतंग की धाती तार का सिरा थामा ही था कि दूसरे सिरे पर बंधी पतंग हाई वोल्टेज तारों पर जा गिरी और वोह सेल्ज़ मेन करन्ट का शदीद झटका लगने से फ़ौत हो गया ❁ इसी त़रह़ लाहोर ही में एक बीस सालह नौ जवान धाती तार वाली पतंग पकड़ते हुए करन्ट लगने से इन्तिक़ाल कर गया ❁ ताजपूरा सकीम में ग्यारह सालह बच्चे की मां अपने इक्लौते बेटे के लिये ईद के कपड़े ख़रीदने गई हुई थी और इधर वोह छत पर खेल रहा था कि एक कटी पतंग अपनी धाती तार समेत उस पर आ गिरी और वोह करन्ट लगने से दम तोड़ गया ❁ धाती डोर का एक और शिकार बादामी बाग़ (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) का 30 सालह शख़्स बना जो ईद से एक रोज़ क़ब्ल इतवार को एक कटी पतंग की लटक्ती हुई धाती तार में उलझ कर करन्ट लगने से वफ़ात पा गया। (बीबीसी उर्दू न्यूज़ ऑन लाइन, फ़रवरी, 2004 ई.)

पतंग की केमीकल वाली डोर की तबाह कारियां

केमीकल वाली डोर के इस्ति'माल से न सिर्फ़ पतंग बाज़ की उंग्लियां ज़ख़्मी होती रहती हैं बल्कि पतंग कटने के बा'द येही डोर जब किसी मोटर साइकिल सुवार या मोटर साइकिल की टंकी पर बैठे हुए बच्चे के गले पर फिर जाए तो तेज़ छुरी की त़रह़ पलक झपक्ते में उसे ज़ब्ह़ कर डालती है। मुख़्तलिफ़ अख़्बारात से लिये गए ऐसे ही 9 इब्रत नाक वाक़िआत मा'मूली सी तब्दीली के साथ मुला-ह़ज़ा कीजिये :

❁ **लाहोर :** 14 सालह त़ालिबे इल्म नदीम ह़ुसैन शाम को ट्यूशन पढ़ कर मोटर साइकिल पर घर वापस आ रहा था, गरदन पर कटी पतंग की डोर फिर जाने से उस की शहरग कट गई, इस से पहले

कि कोई मदद को आता वोह "कलिमा चौक" के क़रीब दम तोड़ चुका था। लाश जब घर पहुंची तो कोहराम मच गया। वोह मेट्रिक के इम्तिहा़न की तय्यारी कर रहा था, उस की बहनें जिन्हों ने उस के ताबनाक मुस्तक़्बिल के ह़वाले से कई ख़्वाब देख रखे थे, उस की किताबें हाथ में लिये बे बसी से आंसू बहाती रहीं और उधेड़ उ़म्र मां लाश से लिपट कर देर तक रोती रही ❁ **मख्खन पूरा** (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) का एक रिहाइशी अपनी अहलिया और तीन सालह बेटे फ़हीम के साथ मोटर साइकिल पर सुवार हो कर सुसराल जा रहा था कि मुज़ंग के क़रीब फ़हीम यकायक ख़ून में लतपत हो गया ! दोनों मियां बीवी वह़्शत से चीख़ो पुकार करने लगे, जब ग़ौर से देखा तो मा'लूम हुवा कि डोर बच्चे की शहरग काट चुकी है, चन्द लम्ह़ों के अन्दर अन्दर नन्हे मुन्ने फ़हीम ने बाप की गोद में तड़प तड़प कर जान दे दी। (नवाए वक़्त) ❁ **शादबाग़** का एक नौ जवान अ़ली मोटर साइकिल पर जा रहा था कि उस के गले में पतंग की धाती तार फिर गई। (जंग) ❁ **फ़ीरोज़ पूर रोड** पर एक मोटर साइकिल सुवार सिकन्दर इक्राम की गरदन डोर की ज़द में आ कर कट गई। (नवाए वक़्त) ❁ (मर्कज़ुल औलिया) **लाहोर** के अ़लाक़े शादबाग़ का नौ जवान मुह़म्मद अ़ली मोटर साइकिल पर जा रहा था यकायक एक कटी पतंग की शीशे का मांझा लगी डोर उस की गरदन को काट गई और वोह सड़क के कनारे तड़प तड़प कर दम तोड़ गया ❁ 14 अगस्त 2006 ई. में सोमवार की सह पहर तीन सालह ख़दीजा यूसुफ़ अपने वालिद मुह़म्मद यूसुफ़ के साथ मोटर साइकिल पर अ़ल्लामा इक़्बाल रोड से गुज़र रही थी कि पतंग की डोर उस के गले पर फिरने से उस के गले की रग कट गई और ख़ून बहने लगा, बच्ची के वालिद उसे शालामार

अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने उस के इन्तिक़ाल की तस्दीक़ कर दी । बच्ची इस्लामिय्या पार्क की रहने वाली थी । (बीबीसी उर्दू 14 अगस्त 2006 ई.) ❁ (मर्कज़ुल औलिया) **लाहोर :** अन्दरूने शहर का रिहाइशी शख़्स अपने डेढ़ सालह बच्चे अ़ब्दुर्रह़मान को अपनी मोटर साइकिल पर बिठा कर ले जा रहा था कि अचानक डोर उस के बच्चे की गरदन पर गिरी, बच्चे के वालिद का कहना है **:** मुझे अचानक बच्चे के रोने की आवाज़ आई और वोह मेरी गोद में तड़पने लगा, उस की गरदन ख़ून से भर गई । मैं उसे अस्पताल ले गया लेकिन वोह जां बर न हो सका । (बीबीसी उर्दू 5 जून 2006 ई.) ❁ 2006 ई. में इतवार के दिन (मर्कज़ुल औलिया) **लाहोर** में फ़ीरोज़ पूर रोड इछरा की सड़क पर कटी हुई पतंग की डोर दस सालह बच्ची अक़्सा के गले पर फिर गई जो अपने वालिद के साथ मोटर साइकिल पर आगे बैठी हुई थी । अक़्सा के वालिद ने ख़ून में लतपत बच्ची को अस्पताल पहुंचाया लेकिन वोह बच न सकी क्यूं कि डॉक्टरों के मुताबिक़ उस की शहरग गहराई से कट गई थी और बहुत ख़ून बह चुका था, वोह अपने मां बाप की इक्लौती बेटी थी । (बीबीसी उर्दू) ❁ जनवरी 2013 ई. में कराची के वस्ती अ़लाक़े नाज़िमआबाद में 7 साल की बच्ची वालिद के साथ मोटर साइकिल पर गुज़र रही थी कि पतंग की डोर उस के गले पर फिर गई जिस के नतीजे में बच्ची शदीद ज़ख़्मी हो गई । बच्ची को तश्वीश नाक ह़ालत में अस्पताल मुन्तक़िल किया गया लेकिन ख़ून ज़ियादा बह जाने के बाइस वोह जां बर न हो सकी । (जंग ऑन लाइन 25 जनवरी 2013 ई.)

पतंग लूटने के दौरान होने वाली हलाकतें

इसी त़रह़ चन्द रुपै की पतंग लूटने के लिये लड़के बाले हाथों

में लम्बी लम्बी छड़ियां और बांस लिये सड़कों पर दीवाना वार फिर रहे होते हैं, जूंही कोई कटी **पतंग** दिखाई देती है उन पर एक जुनून सा त़ारी हो जाता है तेज़ रफ़्तार ट्राफ़िक की परवाह किये बिग़ैर **पतंग** के पीछे लपक्ते हैं, कई बच्चे और नौ जवान इस दौरान गाड़ियों से टकरा कर शदीद ज़ख़्मी हो जाते हैं बा'ज़ अवक़ात तो कुचल कर फ़ौत भी हो जाते हैं । बा'ज़ लोग छतों पर **पतंग** लूटने की कोशिश में कई कई मन्ज़िला इमारतों से ज़मीन पर जा गिरते और अपने हाथ पाउं तुड़वा लेते हैं और कई मौत के मुंह में चले जाते हैं । जैसा कि अख़्बारी रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ ❁ 27 जनवरी 2004 ई. को शादी में शिर्कत के लिये अपने वालिद के साथ रावल पिन्डी से लाहोर आने वाला आठ सालह बच्चा आहनी राड के ज़रीए़ बिजली की तारों से लिपटी **पतंग** उतारते हुए करन्ट लगने से फ़ौत हो गया ❁ 2006 ई. में चौहंग के रिहाइशी मेह़नत कश का 7 सालह बेटा जो दूसरी जमाअ़त का त़ालिबे इ़ल्म था **पतंग** की त़रफ़ लपका और छत से गिर गया और बुरी त़रह़ ज़ख़्मी हो गया और अस्पताल में दम तोड़ गया । जब लाश घर पहुंची तो मां पर ग़शी त़ारी हो गई ❁ नौ शहरा रोड पर 15 सालह नौ जवान **पतंग बाज़ी** करते हुए मकान की छत से गिरा और मौक़अ़ पर ही फ़ौत हो गया ❁ 22 मार्च 2006 को (मर्कज़ुल औलिया) लाहोर में एक बच्चा **पतंग** लूटते हुए ट्रेन के नीचे आ कर इन्तिक़ाल कर गया । (बीबीसी उर्दू ऑन लाइन बि तग़य्युरे क़लील)

एक दिल हिला देने वाला वाक़िआ़

जेहलम (पंजाब, पाकिस्तान) में वाक़ेअ़ एक घर की छत से बिजली के तार ब मुश्किल दो या तीन फ़ुट के फ़ासिले पर होंगे, उन

तारों में एक **पतंग** अटकी हुई थी, दो[2] बच्चे छत की मुंडेर पर खड़े हो कर उस पतंग के हुसूल की कोशिश कर रहे थे मगर उन का हाथ छोटा था और फ़ासिला ज़ियादा, दोनों ने मश्वरा किया और छोटे बच्चे ने बड़े की टांगें मज़्बूती से पकड़ लीं और बड़ा कुछ आगे हो कर मुंडेर पर लटक गया जूंही उस ने पतंग लेने के लिये हाथ बढ़ाया, उस का हाथ बिजली की नंगी तार पर जा पड़ा, रोशनी का एक झमाका हुवा फिर गोश्त जलने की बू आने लगी, छोटा बच्चा एक झटके से गिरा, उठा और तेज़ी से नीचे भागा, जितनी देर में घर वाले ऊपर पहुंचे, तारों में झूलता बच्चा जल कर कबाब हो चुका था।

6 बरस में पतंग बाज़ी से 825 अम्वात

एक सर्वे के मुताबिक़ 2000 ई. से 2006 ई. तक सिर्फ़ छ[6] साल के अ़र्से में 825 अफ़राद इस **पतंग बाज़ी** की वजह से फ़ौत, सेंकड़ों ज़ख़्मी और कई अफ़राद उ़म्र भर के लिये मा'ज़ूर हो गए। 17 मार्च 2008 ई. में एक अख़्बार में येह अफ़्सोस नाक ख़बर शाएअ़ हुई कि कामोन्की में पतंग बाज़ी करते हुए 9 बच्चे छत से गिरे और शदीद ज़ख़्मी हुए जिन को अस्पताल में दाख़िल करा दिया गया। इस त़रह़ के कई वाक़िआ़त की वजह से चन्द साल से **बसन्त मेले** और **पतंग बाज़ी** पर क़ानूनी तौ़र पर पाबन्दी लगा दी गई है जो ता दमे तह़रीर बर क़रार है।

2013 ई. में पाबन्दी के बा वुजूद मुख़्तलिफ़ शहरों में होने वाली अम्वात

2013 ई. में क़ानूनन पाबन्दी के बा वुजूद बा'ज़ शहरों में **बसन्त** मनाई गई, अख़्बारात के मुताबिक़ हुकूमती पाबन्दियों के बा वुजूद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (ترغیب و ترہیب)

मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में **पतंग बाज़ी** के दौरान छत से गिरने, धाती डोर फिरने और हवाई फ़ायरिंग से 3 बच्चे फ़ौत और एक लड़की समेत 44 अफ़राद शदीद ज़ख़्मी हो गए । रावल पिन्डी शह्र में जुमुआ़ के रोज़ **बसन्त** के मौक़अ़ पर **पतंग** की केमीकल लगी डोर, हवाई फ़ायरिंग, धेंगा मुश्ती (या'नी हुल्लड़ बाज़ी) और छत से गिर कर 3 बच्चे फ़ौत और तक़रीबन 40 अफ़राद शदीद ज़ख़्मी हो गए ❁ एक बच्ची सर में गोली लगने से ज़िन्दगी व मौत की कश–मकश में मुब्तला जब कि ❁ धाती डोर के करन्ट से एक बच्चा क़ोमे में चला गया ❁ कई घरों में सफ़े मातम बिछ गई । येह सिल्सिला सारा दिन और सारी रात जारी रहा, पूरा शह्र हवाई फ़ायरिंग से गूंजता रहा ❁ (मर्कज़ुल औलिया) **लाहोर** में शादबाग़ के अ़लाक़े में 18 सालह नौ जवान **पतंग बाज़ी** करते हुए छत से नीचे गिर कर शदीद ज़ख़्मी हो गया ❁ एक नौ जवान छत पर **पतंग बाज़ी** कर रहा था इस दौरान पाउं फिसल जाने के बाइ़स वोह नीचे गिर कर शदीद ज़ख़्मी हो गया । उस की ह़ालत तश्वीश नाक बताई जाती है ❁ **कामोन्की** में धाती डोर फिरने से कमसिन बच्चे समेत तीन अफ़राद शदीद ज़ख़्मी हो गए ❁ **पतंग बाज़ी** के नतीजे में "ग़ल्ला मन्डी" का सात सालह बच्चा, रसूल नगर का नौ जवान, दरवेश पूरा का एक नौ जवान और पुरानी आबादी का एक नौ जवान शदीद ज़ख़्मी हो गए ❁ **पतंग बाज़ी** के दौरान "रावल पिन्डी" में हवाई फ़ायरिंग से 12 सालह लड़की शदीद ज़ख़्मी हो गई ❁ उधर "गोजरांवाला" में पाबन्दी के बा वुजूद धाती डोर गले में और मुंह पर फिरने के बाइ़स कमसिन बच्चे समेत दो[2] अफ़राद शदीद ज़ख़्मी हो गए ❁ सेटेलाइट

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

टाउन का अ़दील अपने तीन सालह बेटे के हमराह मोटर साइकिल पर जा रहा था नौ शहरा रोड के क़रीब कमसिन बच्चे के गले में अचानक पतंग की धाती डोर फिर गई जिस के नतीजे में शदीद ज़ख़्मी हो गया ❁ इलावा अज़ीं शाहीनआबाद में मोटर साइकिल पर जाने वाले अ़ब्दुल्लतीफ़ के चेहरे पर **पतंग** की डोर फिर गई जिसे मक़ामी अस्पताल में ले जाया गया ❁ क़ानूनी पाबन्दी के बा वुजूद गुज़श्ता रोज़ शहरियों ने मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में पतंग बाज़ी कर के क़ानूनी पाबन्दियों को हवा में उड़ा दिया ❁ रावल पिन्डी पोलीस ने पतंग बाज़ों के ख़िलाफ़ क्रेक डाउन के दौरान 30 से ज़ाइद अफ़राद को गिरिफ़्तार कर के पतंगें और डोरें बरआमद कर लीं जिन में केमीकल वाली डोर भी शामिल है। (नवाए वक़्त ऑन लाइन 9 मार्च 2013 ई. बित्तसर्रुफ़)

हवाई फ़ायरिंग से हलाकतें

बसन्त में वक़्फ़े वक़्फ़े से हवाई फ़ायरिंग का भी सिल्सिला रहता है जिस से दिल के मरीज़, छोटे बच्चे और घरेलू ख़वातीन सहम जाती हैं। बन्दूक़ से निकली हुई गोली बा'ज़ अवक़ात किसी को जा लगती है जिस से वोह ज़ख़्मी हो जाता है या फिर जान से जाता है, चुनान्चे एक अख़्बारी इत्तिलाअ़ के मुताबिक़ (मर्कजुल औलिया) **लाहोर** में फ़रवरी 2007 ई. में बसन्त के मौक़अ़ पर **तीन बच्चे** गोली लगने से फ़ौत हो गए। (बीबीसी उर्दू ऑन लाइन 25 फ़रवरी 2007 ई.)

बसन्त मेले की नुहूसतें

इस्लाम और मुसल्मानों की **महब्बत** का दम भरने वाले **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला** आप पर रह़्म फ़रमाए !

यक़ीनन येह वाक़िआत निहायत अफ़्सोस नाक हैं, **बसन्त** के मेले के बाइस कई घरों में सफ़े मातम बिछ जाती है, अस्पताल ज़ख़्मियों से भर जाते हैं, देखते ही देखते मोटर साइकिल सुवारों के गले कट जाते हैं, कितने ही बच्चे और नौ जवान बिजली की तारों और खम्बों से लटक कर लुक़्मए अजल बन जाते हैं, घरों की छतों से गिर कर मा'ज़ूर हो जाने वालों का तो कोई शुमार ही नहीं, सद करोड़ अफ़्सोस ! इज्तिमाई तौर पर रब्बे गफ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियां कर के अपने आप को अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार बनाया जाता है, आपस में लड़ाई झगड़े होते हैं, पड़ोसियों को तंग किया जाता है, नमाज़ें ज़ाएअ़ की जाती हैं, माल फ़ुज़ूल उड़ाया जाता है, अपना अनमोल वक़्त गुनाहों में गुज़ारा जाता है, **बसन्त** इस त़रह़ की बहुत सारी नुहूसतें लुटाती है। क्या कोई ह़क़ीक़ी आ़शिक़े रसूल "बसन्त" की ताईद कर सकता है ? नहीं नहीं और हरगिज़ नहीं। ताशे बाजे बजाना, **पतंग बाज़ी** करना वग़ैरा लह्वो लइ़ब में दाख़िल है और क़ुरआने करीम में इस की मुमा-न-अ़त की गई है चुनान्चे पारह 21 **सूरए लुक़्मान** आयत नम्बर 6 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖۗ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٦

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं कि **अल्लाह** की राह से बहका दें बे समझे और उसे हंसी बना लें उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं :

लह्व या'नी खेल हर उस बातिल को कहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से ग़फ़्लत में डाले । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान) **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि बाजे, ताश, शराब बल्कि तमाम खेलकूद के आलात बेचना भी मन्अ़ हैं और ख़रीदना भी ना जाइज़ क्यूं कि येह आयत उन ख़रीदारों की बुराई में उतरी । इसी त़रह़ ना जाइज़ नाविल, गन्दे रिसाले, सिनेमा के टिकट, तमाशे वग़ैरा के अस्बाब सब की ख़रीदो फ़रोख़्त मन्अ़ है कि येह तमाम ''لَهْوَ الْحَدِيْث'' (या'नी खेल की बात) हैं । (नूरुल इरफ़ान)

मूसीक़ी की कानफाड़ आवाज़

बसन्त मेले में रात ही से कानफाड़ आवाज़ में जदीद तरीन साउन्ड सिस्टम के ज़रीए़ बड़े बड़े स्पीकरों पर बे हंगम **मूसीक़ी** बजाई जाती और बेहूदा बसन्ती गानों से मह़ल्ले और बाज़ार गूंजने लगते हैं बिल ख़ुसूस नन्हे नन्हे बच्चों, उ़म्र रसीदा बुज़ुर्गों, बिस्तर पर सिसक्ते मरीज़ों की रात की नींद और दिन का सुकून बरबाद किया जाता है । मूसीक़ी सुनना सुनाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन **शामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی लिखते हैं : (लचके तोड़े के साथ) नाचना, मज़ाक़ उड़ाना, ताली बजाना, (नीज़ आलाते मूसीक़ी जैसा कि) सितार के तार बजाना, बरबत़, सारंगी, रबाब, बांसरी, क़ानून, झांझन, बिगल बजाना मक्रूहे तह़रीमी (या'नी क़रीब ब ह़राम) है क्यूं कि येह सब कुफ़्फ़ार के शिआ़र (या'नी त़ौर त़रीक़े) हैं,

बांसरी और दीगर साज़ों का सुनना भी **ह़राम** है अगर अचानक सुन लिया तो मा'ज़ूर है। (رَدُّالْمُحتار ج ٩ ص ٦٥١) बयान कर्दा कैफ़िय्यत में मरीज़ों वग़ैरा की ईज़ा रसानी का भी सामान है और अगर मा'लूम होने के बा वुजूद मूसीक़ी से किसी को ईज़ा पहुंचाई तो येह भी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 24 **सफ़ह़ा** 342 में **त़-बरानी शरीफ़** के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ ۔** (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी। (مُعْجَم اَوْسَط ج ٢ ص ٣٨٧ حديث ٣٦٠٧)

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم को ईज़ा देने वालों के बारे में पारह 22 **सू-रतुल अह़ज़ाब** आयत 57 में इर्शाद होता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

मस्जिद के क़रीब ट्रेलर पर धमा चोकड़ियां

बसन्त के मौक़अ़ पर मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में एक साल एक तिजारती कम्पनी ने शहर में जा ब जा "ट्रेलर" खड़े कर दिये जिन

पर लड़के और लड़कियां गानों की धुनों पर बेहूदा क़िस्म का डान्स करते थे। मॉडल टाउन में भी इसी कम्पनी का ट्रक (TRUCK) मस्जिद से तक़रीबन 20 फ़ुट के फ़ासिले पर खड़ा कर दिया गया। अज़ान और नमाज़ के अवक़ात में भी येह लोग नाच गाने में बद मस्त रहे। स्पीकरों की कानफाड़ आवाज़ों, शर्मनाक गानों, बे ढंगे नाच नख़रों और ऊधम बाज़ियों से बेज़ार हो कर मक़ामी लोगों ने मुश्तइल हो कर उस ट्रेलर पर हल्ला बोल दिया और नाच गाने का सिलसिला ज़बर दस्ती बन्द करवाया।

हलाकत के अस्बाब

मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार पर अफ़्सोस का इज़्हार करते हुए, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 246 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''इस्लामी ज़िन्दगी'' सफ़ह़ा** 137 पर **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : सिनेमा मुसल्मानों से आबाद, खेल तमाशों में मुसल्मान आगे आगे, तीतर बाज़ी, बटेर बाज़ी और **पतंग बाज़ी**, मुर्ग़ बाज़ी ग़रज़ सारी बाज़ियां और हलाकत के सारे अस्बाब मुस्लिम क़ौम में जम्अ़ हैं। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 137)

लड़कियां लड़के मिल कर नाचते हैं

बा'ज़ बड़े बड़े होटलों, कोठियों, बंगलों, घरों, दफ़्तरों की छतों और पार्कों में **बसन्त मेला** मनाने वाली बे पर्दा औ़रतों और मर्दों की मख़्लूत़ मह़फ़िलें सजाई जाती हैं, त़रह़ त़रह़ की तराश ख़राश वाले और नीम उ़र्यां लिबास ज़ैबे तन किये जाते हैं जिन से बद निगाही का बाज़ार ख़ूब गर्म होता और इश्क़ व फ़िस्क़ का तूफ़ान खड़ा हो जाता है, शराब के जाम पर जाम लुंढाए जाते हैं, मूसीक़ी की धुनों पर जवान लड़के और

लड़कियां निहायत बे ह़याई के साथ नाचते गाते हैं।

काले सांपों के ज़ह्र का घूंट

ऐ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم के मानने वाले इस्लामी भाइयो और इस्लामी बहनो ! शरीअ़त में शराब पीना पिलाना भी **ह़राम** और नाचना गाना भी **ह़राम** है और येह सब जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। सुनो ! सुनो ! **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है **:** जिस ने दुन्या में शराब पी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **काले सांपों** के ज़ह्र का ऐसा घूंट पिलाएगा कि जिसे पीने से पहले ही उस के चेहरे का गोश्त बरतन में गिर जाएगा, और जब वोह उसे पियेगा तो उस का गोश्त और खाल झड़ जाएगी जिस से दोज़ख़ियों को भी अज़िय्यत पहुंचेगी, याद रखो ! बेशक शराब पीने वाला, बनाने और बनवाने वाला, उठाने और उठवाने वाला और इस की कमाई खाने वाला, सब **गुनाह** में शरीक हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो इन में से किसी की कोई नमाज़ क़बूल फ़रमाएगा, न रोज़ा और न ही ह़ज यहां तक कि वोह तौबा कर लें, अगर बिग़ैर तौबा किये मर गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उन्हें दुन्या में पिये हुए हर घूंट के बदले जहन्नम की पीप पिलाए। जान लो ! हर नशा आवर चीज़ ह़राम है और हर शराब **ह़राम** है।

(जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. 2, स. 582, الزواجر ج۲ص۳۱۶)

कफ़न चोर ने जब क़ब्र खोदी तो......

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**'' जिल्द 2 **सफ़ह़ा** 586 पर एक ''कफ़न चोर'' की त़वील **ह़िकायत** का कुछ ह़िस्सा अपने अन्दाज़ में पेश करता हूं, चुनान्चे एक तौबा करने वाले **कफ़न चोर** का बयान है **:** मैं ने कफ़न चुराने के

लिये जब एक क़ब्र खोदी तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र मेरे सामने था ! क्या देखता हूं कि मरने वाला **ख़िन्ज़ीर** या'नी सुवर बन चुका है और उसे तौ़क़ और बेड़ियों से जकड़ दिया गया है ! मैं ख़ौफ़ से थर्रा उठा...... कि एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चौंका दिया ! कोई कह रहा था : **''इस के अ़ज़ाब का सबब येह है कि येह शख़्स शराब पीता था और तौबा किये बिग़ैर मर गया ।''** (الزواجر ج۲ص۳۱۸)

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

खौलता हुवा मश्रूब

ह़दीसे पाक में है कि **शराबी** पुल सिरात़ पर आएंगे तो जहन्नम के फ़िरिश्ते उन्हें उठा कर **नहरुल ख़बाल** की त़रफ़ ले जाएंगे, पस वोह **शराब** के पिये हुए हर गिलास के बदले **नहरुल ख़बाल** से पियेंगे और वोह ऐसा मश्रूब है कि अगर उसे आस्मान से बहा दिया जाए तो उस की ह़रारत (या'नी गरमी) से तमाम आस्मान जल जाएं ।

(जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. 2, स. 582, الزواجر ج۲ص۳۱۶،کتاب الکبائرص۹۶)

शराब तर्क करने का इन्आ़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला आप पर और मुझ पर रह़्म करे और हमें जहन्नम के सख़्त गर्म और खौलते हुए मश्रूब (DRINK) से बचाए । आमीन । बराए करम ! शराब नोशी से बच कर रहिये अगर कभी पीने की भूल कर बैठे हैं तो सच्ची तौबा कर लीजिये, जो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब **शराब** छोड़ेगा उसे जन्नत में भर भर कर जाम पीने को मिलेंगे, चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है,

अल्लाह तआला फ़रमाता है : "क़सम है मेरी इ़ज़्ज़त की ! मेरा जो बन्दा शराब का एक घूंट भी पियेगा, मैं उस को उतनी ही पीप पिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से उसे छोड़ेगा, मैं उस को क़ियामत के दिन पाकीज़ा हौज़ों (या'नी जन्नत के हौज़ों) से पिलाऊंगा।"

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۸ص۳۰۷حدیث۲۲۳۷۰)

मौत हांडियों में उबाले जाने से भी सख़्त है

ऐ अल्लाह व रसूल से मह़ब्बत करने वाले मुसल्मानो ! आख़िर कब तक एक गुस्ताख़े रसूल की याद में जारी होने वाले गुनाहों से भरपूर **बसन्त मेले** के ज़रीए आप ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की नाराज़ियां मोल लेते रहेंगे ? गुनाहों के कीचड़ में लतपत रहते हुए अगर मौत का शिकार हो गए तो क्या बनेगा ! कभी आप ने नज़्अ़ की सख़्तियों पर ग़ौर फ़रमाया ? कभी रूह़ निकलते वक़्त होने वाली तक्लीफ़ों के बारे में सोचा ? सुनो ! सुनो ! ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : "मौत दुन्या व आख़िरत की होल नाकियों में सब से बढ़ कर ख़ौफ़नाक है, येह आरों से चीरने, क़ैंचियों से काटने और हांडियों में उबालने से ज़ाइद (तक्लीफ़ देह) है, अगर मुर्दा ज़िन्दा हो कर मौत की सख़्तियां लोगों को बता दे तो उन की नींदें और ऐशो आराम सब कुछ ख़त्म हो जाता।" (شَرحُ الصُّدُور ص۳۳)

हम चन्द मिनट की लज़्ज़त की ख़ात़िर कितना बड़ा ख़त़रा मोल ले रहे हैं इस बात को इस रिवायत से समझने की कोशिश कीजिये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

सफ़ह़ा 141 पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं, मन्क़ूल है : ''बेशक सकराते मौत की शिद्दत दुन्या की लज़्ज़तों के मुत़ाबिक़ है।'' तो जिस ने ज़ियादा लज़्ज़तें उठाईं उसे नज़्अ़ की तक्लीफ़ भी ज़ियादा होगी। (مِنھاجُ العابدِین ص۸۵)

हम दुन्या में क्यूं पैदा किये गए हैं !

ऐ क़ुरआने करीम के हर हर ह़र्फ़ पर ईमान रखने वाले प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद समझने की कोशिश कीजिये, उ़म्रे अ़ज़ीज़ के अनमोल हीरे पतंग बाज़ी और खेल तमाशों पर बरबाद मत कीजिये। **ख़ुदा की क़सम !** हमें दुन्या में खेलकूद के लिये नहीं भेजा गया, सुनो ! सुनो ! **अल्लाह तआ़ला** पारह 27 **सू-रतुज़्ज़ारियात** आयत नम्बर 56 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

पारह 18 **सू-रतुल मुअमिनून** आयत 115 में इर्शादे इलाही है :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।

इस आयते मुबा-रका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं : और (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं बल्कि तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इ़बादत लाज़िम

करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा (या'नी बदला) दें । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 647)

पतंग बाज़ की तौबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआला आप पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाए, नेकियों और सुन्नतों भरी त़वील ज़िन्दगी दे और बे ह़िसाब बख़्शे । आमीन । हाथ बांध कर अ़र्ज़ है : अगर आप ने कभी पतंग बाज़ी की हो तो हाथों हाथ इस से बल्कि अपने सारे ही गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये, बत़ौरे तरग़ीब **एक पतंग बाज़ की तौबा** की "म-दनी बहार" मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई की तह़रीर **बित्तसर्रुफ़** पेश करता हूं : अफ़्सोस ! मेरी पिछली ज़िन्दगी सख़्त गुनाहों में गुज़री, मैं **पतंग बाज़ी** का शौक़ीन था नीज़ विडियो गेम्ज़ और गोलियां खेलना वग़ैरा मेरे मशाग़िल में शामिल था । हर एक के मुआ़-मले में टांग अड़ाना, ख़्वाह म ख़्वाह लोगों से लड़ाई मोल लेना, बात बात पर मारधाड़ पर उतर आना वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे । ख़ुश क़िस्मती से एक इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश पर मैं **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़-शरे में अ़लाक़े की मस्जिद में **मो'तकिफ़** हो गया । मुझे बहुत अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आए और ख़ूब सुकून मिला । मैं ने मज़ीद दो साल ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की । एक बार हमारी मस्जिद के **मुअज़्ज़िन** साह़िब **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में ले आए । एक मुबल्लिग़ बयान कर रहे थे,

सफ़ेद लिबास और कथ्थई चादर में मल्बूस, चेहरे पर एक मुश्त दाढ़ी और सर पर इमामा शरीफ़ के ताज वाला ऐसा बा रौनक़ चेहरा मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार ही देखा था। मुबल्लिग़ के चेहरे की कशिश और नूरानिय्यत ने मेरा दिल मोह लिया और मैं दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** में आ गया और अब (ता दमे तह़रीर) दो साल से आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) ही में ए'तिकाफ़ करता हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1379, बि तग़य्युरे क़लील)

मस्त हर दम रहूं मैं दे दे उल्फ़त का जाम या अल्लाह
भीक दे दे ग़मे मदीना की बहरे शाहे अनाम या अल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक चुप सो सुख 100

तालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़फ़िरत व बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

25 जुमादल उख़्रा 1434 सि.हि.
06-05-2013

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़्लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنز العمال)

फ़ेहरिस

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الزواجر	دار المعرفۃ بیروت
نور العرفان	پیر بھائی کمپنی مرکز الاولیاء لاہور	کتاب الکبائر	پشاور
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	جہنم میں لے جانے والے اعمال	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ردّ المحتار	دار المعرفۃ بیروت
فردوس الاخبار	دار الفکر بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
منہاج العابدین	دار الکتب العلمیۃ بیروت	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स किसी मुब्तलाए बला को देख कर येह दुआ पढ़ ले :

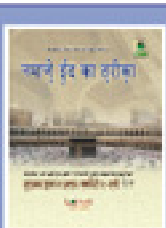
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا۔

तो वोह उस बला से महफ़ूज़ रहेगा। (ترمذی حدیث ۳۴۴۳)

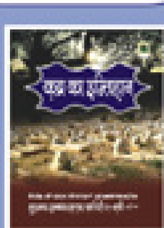
हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : बला ख़्वाह **जिस्मानी** हो जैसे कोढ़, अन्धा पन या और कोई बीमारी, **माली** जैसे क़र्ज़, फ़क्र, तंगिये रिज़्क़ वग़ैरा, या **दीनी** जैसे कुफ़्र, फ़िस्क़, ज़ुल्म, बिद्अत वग़ैरा ग़रज़ कि हर मुसीबत के लिये येह दुआ इक्सीर है। (لمعات، مرقات) येह दुआ बहुत आहिस्ता कहे कि वोह मुसीबत ज़दा न सुने, उसे रन्ज होगा। (لمعات) (मिरआत, जि. 4, स. 38) मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه, लिखते हैं : तीन[3] क़िस्म की बीमारियों (1) ज़ुकाम (2) खुजली और (3) आशोबे चश्म में मुब्तला को देख कर येह दुआ न पढ़ी जाए।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 70 मुलख़्ख़सन)









मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, प्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net
MC 1286